RNI NO HARHIN/2017/72144

मूल्य **90** रुपये

यात्रा आमंत्रण

अंक **15**

भारत की एकमात्र हिंदी पर्यटन पत्रिका

जनवरी - फ़रवरी

2025 HAPPY New Year

महा कुम्भ 2025

माचू पिच्चू के रहस्य

स्वालबार्ड में जीवन

राजबाड़ी

बंगाल के संस्कृति का सरमाया

महा कुम्भ 2025: विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक मेला और शानदार विपणन अवसर"

महा कुम्भ 2013 में श्रद्धालुओं की संख्या थी - 12 करोड़।

कुम्भ 2019 में श्रद्धालुओं की संख्या थी - 24 करोड़।

महा कुम्भ 2025 (अनुमानित) में श्रद्धालुओं की संख्या - 40 करोड़।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 2013 में कुल राजस्व - 12,000 करोड़ रुपये।

कुम्भ 2019 में कुल राजस्व - 1.2 लाख करोड़ रुपये।

ब्रांड्स महा कुम्भ में 3000 करोड़ रुपये के निवेश की तैयारी में हैं।"

45 दिन लंबा यह कार्यक्रम 13 जनवरी 2025 से शुरू होगा।

संपादकीय

नया साल 2025 - ज्योतिष और यात्रा का अद्भुत संगम"

प्रिय पाठकों,
आपको नए साल की ढेर सारी शुभकामनाएं! 2025 आपके जीवन में खुशियाँ, समृद्धि, और नई दिशा लेकर आए, ऐसी मेरी कामना है। इस नए साल में, हम एक बेहद दिलचस्प विषय पर चर्चा करेंगे जो न केवल आपकी यात्रा को रोमांचक बना सकता है, बल्कि आपके जीवन को भी नई दिशा दे सकता है – और वह है "एस्ट्रोकार्टोग्राफी" (Astrocartography), यानी ज्योतिष के माध्यम से यात्रा की दिशा।
आपने ज्योतिष के बारे में सुना ही होगा, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि यह आपकी यात्रा के अनुभव को भी प्रभावित कर सकता है? एस्ट्रोकार्टोग्राफी एक अद्भुत ज्योतिषीय पद्धति है, जो यह बताती है कि आपकी जन्मकुंडली में ग्रहों की स्थिति के आधार पर कौन से स्थान आपके लिए यात्रा करने के लिए उपयुक्त हो सकते हैं।
यह प्रणाली आपको यह जानने में मदद करती है कि आप कहां यात्रा करें, ताकि आप अपने जीवन के नए अध्याय की शुरुआत कर सकें। उदाहरण के लिए, शुक्र (Venus) की रेखा पर यात्रा करने से आप आत्मविश्वास और रोमांस का अनुभव कर सकते हैं, जबकि बुध (Mercury) की रेखा पर यात्रा करने से आप ज्ञान प्राप्ति और संवाद में निपुण हो सकते हैं।
सोचिए, क्या होगा अगर आप जान सकें कि कौन सा स्थान आपके लिए विशेष रूप से उपयुक्त है? क्या आप कभी महसूस करते हैं कि कुछ स्थानों पर जाते हुए आपको विशेष ऊर्जा मिलती है? हो सकता है, ये स्थान आपके जन्म के समय ग्रहों की विशेष स्थिति से जुड़े हों!
इस संपादकीय में हम आपको एक नया दृष्टिकोण देंगे कि कैसे एस्ट्रोकार्टोग्राफी का उपयोग करके आप अपनी यात्रा को और भी लाभकारी बना सकते हैं। तो इस साल की यात्रा को और भी खास बनाने के लिए अपनी जन्मकुंडली के ग्रहों की स्थिति को ध्यान में रखकर यात्रा की योजना बनाएं।
आशा है कि आपको यह विषय रोचक और प्रेरणादायक लगेगा। हमें बताइए, क्या आप अपनी यात्रा के अनुभवों को और भी खास बनाने के लिए एस्ट्रोकार्टोग्राफी को अपनाने का विचार करेंगे? सुनिए, यह सिर्फ एक शुरुआत है! इस साल, आप किस ग्रह रेखा पर यात्रा करेंगे?
नया साल मुबारक हो!
— संपादक
विश्वदीप रॉय चौधुरी

संपादक
बिस्वदीप रॉयचौधरी
सलाहकार
गौर कंजिलाल
वरिष्ठ संवाददाता
सुहासिनी सकिर
उत्तर प्रदेश ब्यूरो प्रमुख
प्रताप सिंह
सांगली संवाददाता
तेजस सांगड़
दिल्ली टीम
कपिल अत्री
दीपक शर्मा
शंकर सिंह कोरंगा
मोहन जोशी
भावना अत्री
यूरोप संवाददाता
चेतन वाधेर
सोशल मीडिया पोस्ट प्रोडक्शन
विक्रांत रंजन
मुंबई टीम
नरेन्द्र पाटिल

189/10, सेक्टर एक, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई 61

हमारा अनुसरण करें
@yatramantran

हमसे संपर्क करें
www.willindiachange.org
www.yatramantran.com

हमारा यूट्यूब चैनल सब्सक्राइब करें
यात्रा आमंत्रण

राजबाड़ी

बंगाल के संस्कृति का सरमाया

पर्यटन मंत्रालय ने 75 वर्ष से पुराने किलों और हवेलियों के रूपांतरण को बढ़ावा देने के लिए एक योजना की शुरुआत करके धरोहर होटलों के आंदोलन को प्रोत्साहन दिया है।"

राजबाड़ी" नाम का शाब्दिक अर्थ बंगाली में "राजसी घर" है, जो इस जिले के समृद्ध इतिहास और बंगाल के शाही परिवारों से जुड़ी विरासत को सही रूप से व्यक्त करता है। राजबाड़ी लंबे समय से इस क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और राजनीतिक केंद्र रहा है, जिसमें मुस्लिम और मुग़लकाल की गहरी ऐतिहासिक धरोहर समाहित है।

ब्रिटिश उपनिवेश काल के दौरान, राजबाड़ी अपनी विशाल ज़मीनों के लिए प्रसिद्ध था और यह एक प्रमुख कृषि केंद्र था। इस जिले में कई ऐतिहासिक स्थल हैं, जिनमें आलीशान महल और किले शामिल हैं, जो कभी समृद्ध जमींदारों और नवाबों का निवास स्थान हुआ करते थे। इस क्षेत्र ने 1971 केबांगलादेश मुक्ति संग्राम के दौरान भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जहाँ कई प्रसिद्ध युद्ध और बलिदान हुए थे।

पुराना सामान सोने के वजन के बराबर होता है" — यह कहावत इस बात को व्यक्त करती है कि पुराने और ऐतिहासिक चीजों की कीमत बहुत ज्यादा होती है। यह एहसास अब पश्चिम बंगाल सरकार को समझ में आ रहा है। राज्य सरकार ने कई राजसी संपत्तियों को पुनर्निर्मित करने का निर्णय लिया है, ताकि 'राजबाड़ी पर्यटन' को बढ़ावा दिया जा सके। यह कदम "अनुभव बंगाल" कार्यक्रम का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य राज्य के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर को पर्यटकों के लिए आकर्षक बनाना है। इस परियोजना के तहत, राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित लगभग 100 राजबाड़ियों और हवेलियों को पुनर्निर्मित किया जाएगा, ताकि पर्यटन को बढ़ावा मिल सके और इन स्थानों का सांस्कृतिक महत्व उजागर किया जा सके।

इनमें से 56 संपत्तियों की पहचान पहले ही की जा चुकी है, जिनमें महिषादल, सेरामपुर, तामलुक, अन्दुल, कृष्णनगर, सोबाबाजार और बर्दवान जैसे प्रसिद्ध महल शामिल हैं। हालांकि, इनमें से कुछ संपत्तियाँ कानूनी मुद्दों में उलझी हुई हैं, जिनका समाधान सरकार कर रही है। राजबाड़ी पर्यटन की संभावना केवल एक ऋणी राज्य के खजाने को भरने तक सीमित नहीं है। धरोहर की आर्थिक संभावनाएँ निर्विवाद हैं।

आमदपुर राजबाड़ी और होमस्टे: बंगाल की शाही धरोहर

आमदपुर, जो पश्चिम बंगाल के एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर से भरा हुआ स्थल है, अपने ऐतिहासिक महलों और मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। यह जगह विशेष रूप से आमदपुर होमस्टे के कारण पर्यटकों के बीच आकर्षण का केंद्र बन चुकी है, जहाँ पर लोग न केवल बंगाल की शाही संस्कृति का अनुभव कर सकते हैं, बल्कि यहां के ऐतिहासिक स्थलों को भी देख सकते हैं।

आमदपुर होमस्टे: एक ऐतिहासिक अनुभव

चौधुरी या सेन शर्मा परिवार मूल रूप से त्रिहट्टो या तेहट्टा गाँव के निवासी थे, जो कभी रॉयल बंगाल का हिस्सा था। समय के साथ, इस परिवार के कुछ सदस्य गोर के राज्य में चले गए। श्री कृष्ण राम सेन शर्मा, जो मुर्शिदाबाद के नवाब के एक सम्मानित दरबारी थे, उनके कारण आमदपुर को अपने सबसे प्रसिद्ध पुत्रों के शानदार आभा का अनुभव हुआ। वहीं, उनके एक अन्य पुत्र दुर्गा राम सेन शर्मा ने बहासपुर (बर्दवान) की ओर रुख किया और अपने साथ परिवार की देवी की मूर्ति लेकर गए, जो आज भी राधा माधवजी के मंदिर में पूजी जाती है।

आमदपुर होमस्टे एक ऐतिहासिक घर है जो लगभग 400 साल पुराना है और कोलकाता से केवल 90 किलोमीटर दूर स्थित है। **शिलादित्य चौधुरी, जो इस होमस्टे के मेज़बान हैं, बताते हैं कि वे चाहते हैं कि लोग बंगाल की समृद्ध धरोहर, संस्कृति और पुराने समय के अद्वितीय व्यंजन का अनुभव करें।** उनका मानना है कि सबसे बेहतरीन अनुभव एक ऐतिहासिक घर में रहकर ही लिया जा सकता है, जो सदी पुराना है और जहां समय के साथ वह परंपराएं और संस्कृति जीवित हैं।

आमदपुर के प्रमुख दर्शनीय स्थल और गतिविधियाँ

1.**दुर्गा बाड़ी** - यह चौधुरी परिवार का मुख्य पूजा स्थल है, जहां सालभर कई महत्वपूर्ण त्योहार जैसे दुर्गा पूजा, काली पूजा, रास यात्रा, सरस्वती पूजा, कातिक पूजा, डोलयात्रा, रथ यात्रा आदि मनाए जाते हैं। यहाँ की धार्मिक धरोहर और उत्सवों का अनुभव बहुत खास है।

2.**बड़ा काली, मेजो काली, ख्यापा काली मंदिर** - ये मंदिर न केवल धार्मिक महत्व रखते हैं, बल्कि उनकी वास्तुकला और माहौल में कुछ रहस्यमय और अद्वितीय भी है।

3.**बाग बाड़ी या मुखर्जी बाड़ी** - यह एक भव्य हवेली है, जो अपनी सुंदरता और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है।

आमदपुर का ऐतिहासिक महत्व और संस्कृति

आमदपुर न केवल ऐतिहासिक स्थलों का घर है, बल्कि यह बंगाल की पारंपरिक संस्कृति और वास्तुकला का प्रतीक भी है। शिलादित्य चौधुरी का मानना है कि इस क्षेत्र की यात्रा करने से पर्यटकों को बंगाल के पुराने समय की संस्कृति और रहन-सहन को समझने का बेहतरीन मौका मिलता है। आमदपुर होमस्टे एक ऐसी जगह है जहां आप सिर्फ रहने के लिए नहीं आते, बल्कि आप एक समृद्ध इतिहास, संस्कृति और पारंपरिक जीवनशैली का अनुभव करते हैं।

नाराजोले राजबाड़ी: एक ऐतिहासिक धरोहर

नाराजोले, जो पश्चिम बंगाल के घाटाल उपविभाग के दासपुर-1 ग्राम पंचायत में स्थित एक गाँव है, एक दिन की यात्रा के लिए पांसकुरा स्टेशन से 35 किलोमीटर दूर स्थित है। नाराजोले में स्थित राजमहल 360 बीघे जमीन पर फैला हुआ है, जिसमें तीन मंजिला महलऔर 'हवामहल' (बॉलरूम) शामिल है।यह महल 60 बीघे क्षेत्र में स्थित है, और इसे एक किले जैसे घेरे से घेर लिया गया है।किले का बाहरी हिस्सा 300 बीघे तक फैला हुआ है, जो लंका गढ़ तक जाता है, जहां 'जलहरी' नामकरजाओं का आउट हाउस स्थित है।यह क्षेत्र 100 बीघे में फैला हुआ है और इसे भी खंदक से घेरा गया है। किले के बाहरी हिस्से में 54 मंदिर स्थित हैं, जिनमें एक 10 बीघे का प्लॉट डिग्री कॉलेज के निर्माण के लिए दान किया गया है। इन मंदिरों में भारतीय वास्तुकला परंपरा का अद्वितीय संयोजन देखने को मिलता है, जिसमें बंगाल और यूरोपीय वास्तुकला का शानदार मिश्रण है।

महिषादल राजबाड़ी इतिहास का आईना

महिषादल राजबाड़ी की शाही धरोहर 300 वर्षों से अधिक पुरानी है। इसकी शुरुआत 1500 ईस्वी के आसपास कल्याण रॉयचौधरी द्वारा की गई थी, जो मुग़ल बादशाह को कर नहीं चुका पाए, जिससे उनका महल नीलाम हो गया।उत्तरप्रदेश के व्यापारी जनार्दन उपाध्याय ने इसे खरीदाऔर कुछ पीढ़ियों बाद उनके वंशज आनंदलाल उपाध्याय ने राजा की उपाधि प्राप्त की। उनकी पत्नी रानी जानकी, जो एक ऐतिहासिक शख्सियत थीं, ने कई मंदिरों का निर्माण कराया और कई युद्धों में भाग लिया।

रानी जानकी को जब यह खबर मिली कि डाकू उनके महल पर हमला करने वाले हैं, तो उन्होंने पुर्तगाल से सैनिक बुलवाए, जिन्होंने महल की रक्षा की और वहीं जीवन खाली (अब गिओंखाली) में एक बस्ती और चर्च स्थापित किया, जो आज भी मौजूद है। राजा आनंद लाल और रानी जान की की एक बेटी मनथरा देवी थीं, जिनकी शादी चग्गन प्रसाद गर्गा से हुई, और इस तरह गर्गा वंश की शुरुआत हुई। वर्तमान में महिषादल राजबाड़ी के 13 वीं पीढ़ी के वंशज इस शाही महल में रहते हैं।

झारग्राम राजबाड़ी: समय जहा ठहर गया

झारग्राम राजबाड़ी बंगाल के एक ऐतिहासिक शाही महल के रूप में प्रसिद्ध है, जो ब्रिटिश भारत के झारग्राम राज्य के हिस्से के रूप में अस्तित्व में आया था। यह राज्य 16वीं सदी के अंत में राजा मन सिंह के द्वारा स्थापित हुआ, जब उन्हें मुग़ल सम्राट अकबर द्वारा बंगाल, बिहार और उड़ीसा का दीवान नियुक्त किया गया।

किवदंती के अनुसार, राजा मन सिंह ने 1592 ई. में बंगाल पर विजय प्राप्त करने के लिए राजस्थान से अपने सेनापति श्री सर्वेश्वर सिंह को भेजा था। उन्होंने स्थानीय माल राजाओं को पराजित किया और इस जीत की याद में अपनी उपाधि 'मल्लदेव' अपनाई, जो उनके वंशजों के नाम का हिस्सा बन गई। इस परंपरा के तहत, विजयदशमी के दिन माल राजा की मूर्ति बनाई जाती है और उसका वध किया जाता है।

झारग्राम के रॉयल परिवार ने अपने साम्राज्य और जमींदारी से संबंधित कामकाजी व्यवस्थाएं आज के झारग्राम महल से ही चलाई थीं।

महल की सुविधाएं और आकर्षण

झारग्राम राजबाड़ी में ठहरने के दौरान आपको बगीचा, डाइनिंग, बोनफायर, योग और ध्यान जैसी सुविधाएं मिलती हैं। यहाँ के एसी डीलक्स कमरे, गर्म पानी, पावर बैक अप और डॉक्टर ऑन कॉल जैसी सुविधाओं से आपका स्वागत किया जाता है।

कैसे पहुंचें

- रेलमार्ग: हावड़ा या टाटानगर से एक्सप्रेस या लोकल ट्रेन से झारग्राम स्टेशन पहुंचें। स्टेशन से टैक्सी या टोटो लेकर झारग्राम राजबाड़ी तक पहुंच सकते हैं।
- सड़कमार्ग: कोलकाता एयरपोर्ट या शहर से एनएच 6 (कोलकाता-मुंबई हाईवे) के माध्यम से 166 किमी की दूरी तय कर 4 घंटे में झारग्राम महल पहुंच सकते हैं।

यात्रा का अनुभव

झारग्राम राजबाड़ी का शांत वातावरण और शाही धरोहर इसे एक आदर्श पर्यटन स्थल बनाता है। हर महीने यहाँ लगभग 200 पर्यटक आते हैं और इस ऐतिहासिक स्थल का आनंद लेते हैं।

फूलबाग महल और होमस्टे

आजकल, महिषादल राजबाड़ी के फूल बाग महल को होमस्टे के रूप में विकसित किया गया है, जिसमें सात कमरे हैं, जो सभी आधुनिक सुविधाओं से लैस हैं।महल के एक हिस्से में एक संग्रहालय भी है, जिसमें शाही परिवार द्वारा इस्तेमाल किए गए पुराने शस्त्र, प्राचीन फर्नीचर, पुराने सिक्के, और युद्ध में शिकार किए गए जानवरों के शवों से बनी ट्रॉफियां रखी गई हैं। यहां एक बिलियर्ड्स रूम, एक रॉयल डाइनिंग रूम और दरबार हॉल भी है, जहाँ विशेष मेहमानों के लिए भोजन की व्यवस्था की जाती है।

रंगिबदान महल और श्री श्री मदन गोपाल मंदिर

फूल बाग महल के अलावा, महिषादल राजबाड़ी का एक और ऐतिहासिक महल है, जिसे रंगिबदान महल कहा जाता है।यह महल 1840 में बना था और अब इसे विरासत स्थल के रूप में विकास के लिए हेरीटेज कमीशन द्वारा संरक्षित किया गया है। इसके साथ ही रानी जानकी द्वारा 1774 में स्थापित श्री श्रीमदन गोपाल मंदिर, महिषादल के धार्मिक महत्व को दर्शाता है।

महिषादल के प्रसिद्ध त्योहार और आकर्षण

महिषादल में आयोजित होने वाली रथ यात्रा, जो 1776 से शुरू हुई, बंगाल के प्रमुख त्योहारों में से एक है, जिसमें लाखों लोग भाग लेते हैं। इसके अलावा, 1778 में रानी जानकी के शासनकाल में दुर्गा पूजा की शुरुआत हुई, जो आज भी महिषादल राजबाड़ी के थाकुर दालान में बड़े धूम धाम से मनाई जाती है।

महिषादल के आसपास अन्य दर्शनीय स्थलों में तामलुक का प्राचीन Bargabhima मंदिर, हल्दिया बंदरगाह, जो बंगाल का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र है, और जीवन खाली (अब गिओंखाली), जिसे त्रिवेणी संगम के नाम से भी जाना जाता है, शामिल हैं, जहाँ तीन नदियाँ- हुगली, हल्दी और रूपनारायण मिलती हैं।

महिषादल राजबाड़ी में यात्रा का अनुभव

महिषादल राजबाड़ी में ठहरने का अनुभव बहुत ही अद्भुत है।यहाँ के लोग अत्यंत स्वागत योग्य हैं और उनकी मेहमान नवाजी दिल को छू लेने वाली है। यह एक शांतिपूर्ण और शाही वातावरण प्रदान करता है, जो आपको पुराने समय के बंगाल की संस्कृति काअनुभव कराता है।

सबसे अच्छा समय यात्रा करने के लिए

इटाचुना राजबाड़ी: शाही संस्कृति का प्रतिक

कोलकाता से एक घंटे की दूरी पर स्थित इटाचुना राजबाड़ी, हुगली में एक आदर्श हेरिटेज होमस्टे है, जो शाही वातावरण में विश्राम करने के इच्छुक पर्यटकों के लिए एक बेहतरीन स्थान है। इसे "बरगी डांगा" भी कहा जाता है और इसका इतिहास काफी दिलचस्प है। यह महल 1766 में सफल्य नारायण कुंडू के पूर्वजों द्वारा बनवाया गया था। कुंडू परिवार की उत्पत्ति मराठा योद्धाओं से हुई थी, जिन्हें इस क्षेत्र में कर वसूलने के लिए नियुक्त किया गया था – जिन्हें बंगाली लोकगीतों में 'बरगी' के नाम से जाना जाता है।

आज, यह परिवार इस धरोहर संपत्ति को एक होमस्टे के रूप में प्रबंधित करता है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना है। इटाचुना राजबाड़ी की पारंपरिक पंचमोहोला (पाँच हालों वाली) हवेली में कोर्टहाउस, डांस हॉल, किचन विंग, गेस्ट विंग, और अंत में महिलाओं के लिए आरक्षित अंदर-महल होते हैं। हाल के वर्षों में, राजबाड़ी के एक हिस्से को हेरिटेज बुटीक होटल में बदल दिया गया है, जहां आप गाइडेड टूर के माध्यम से हवेली और इसके आसपास के क्षेत्र को देख सकते हैं।

राजबाड़ी के कमरे पारिवारिक रिश्तों और वरिष्ठता के आधार पर नामित किए गए हैं, जैसे 'छोटो पिशी', 'गिन्नी माँ', 'बड़ा माँ' और 'बिलाश मज्जरी'। यहाँ एक सुंदर बगीचे के साथ खुले आंगन वाले कमरे हैं, जो प्राचीन फर्नीचर और खूबसूरत फाउंटेन से सजाए गए हैं।

कैसे पहुंचें: कोलकाता से एक घंटे की दूरी पर स्थित यह राजबाड़ी आसानी से सड़क मार्ग से पहुंचा जा सकता है।

बावाली राजबाड़ी: शांति और हरियाली का अद्भुत संगम

कोलकाता से केवल 35 किमी दूर स्थित बावाली राजबाड़ी शहरी हलचल से दूर एक शांतिपूर्ण ग्रामीण अनुभव प्रदान करता है। यह स्थान कोलकाता से दो घंटे की ड्राइव पर है, और यहां की खूबसूरती और शांति आपको शहर की भागदौड़ से दूर ले जाती है। बावाली के पूर्व जमींदार मंडल परिवार ने अपनी संपत्ति के एक हिस्से को फार्महाउस में बदल दिया है, जो नौ बीघा भूमि में फैला हुआ है। चारों ओर हरे-भरे खेत और तालाब हैं, और इसके अंदर सुंदर बगीचे, फूलों की नर्सरी, और असहाय बच्चों के लिए एक स्कूल भी स्थित है।

यहां के आकर्षणों में 1794 में बने "नवरत्न" गोपीनाथ जीउ मंदिर के खंडहर, राधाबल्लव मंदिर, और बावाली राजबाड़ी शामिल हैं। फार्महाउस में मछली पकड़ने की सुविधा भी है, जो "कैच एंड रिलीज" नीति पर आधारित है। इसके अलावा, यहां के हरे-भरे वातावरण और जलाशयों में पक्षी निरीक्षण के अच्छे अवसर भी हैं।

फार्महाउस में चार कुटिया और एक पेड़ के घर में तीन कमरे हैं। भोजन की व्यवस्था पहले से ऑर्डर पर होती है, जिसमें आपको पारंपरिक बंगाली भोजन, पुराने और प्रसिद्ध व्यंजन मिलते हैं। आप चाहें तो राजबाड़ी में ठहर सकते हैं और बंगाली ग्रामीण महल जीवन का अनुभव ले सकते हैं।

कैसे पहुंचें: कोलकाता से एक घंटे की कार यात्रा पर स्थित, और सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन सीलदह (35 किमी) और budge Budge (11 किमी) हैं।

कृष्णनगर, जो जलांगी नदी के किनारे स्थित है, एक ऐतिहासिक शहर है और यह राजा कृष्ण चंद्र राय (1728 – 1782) के नाम पर नामांकित है। राजा कृष्ण चंद्रराय के शासनकाल के दौरान यहां बने कृष्ण नगर राजबाड़ी में आज भी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। हालांकि, इस महल के पिछले वैभव के निशान अब समाप्त हो चुके हैं, और आज केवल इसकी दीवारों पर उकेरी गई शानदार नक्काशी और खंडहरों के रूप में यह महल बाकी रह गया है।

कृष्णनगर राजबाड़ी: एक ऐतिहासिक स्थल

बेलगडिया पैलेस: ओडिशा में एक शाही ठहराव

बारिपदा, मयूरभंज, ओडिशा के ऐतिहासिक शहर में स्थित बेलगडिया पैलेस, विक्टोरियन वास्तुकला और जॉर्जियाई डिज़ाइन के तत्वों का एक शानदार उदाहरण है। 1800 के दशक में निर्मित यह महल मूल रूप से मयूरभंज रियासत के शाही परिवार के विदेशी मेहमानों और राजकीय अतिथियों के लिए एक निवास स्थान के रूप में तैयार किया गया था। जब रियासत ने भारतीय संघ में विलय किया, तो महल को एक शाही निवास के रूप में पुनः स्थापित किया गया।
यह महल भांज राजवंश की 48वीं पीढ़ी के सदस्य मृणालिका और अक्षिता का घर है, जो मयूरभंज के पूर्व शासक थे। वे ओडिशा और बंगाल के बीच पली-बढ़ी हैं, जिससे इन दोनों राज्यों की सांस्कृतिक धरोहर का एक अनोखा संगम उत्पन्न हुआ।

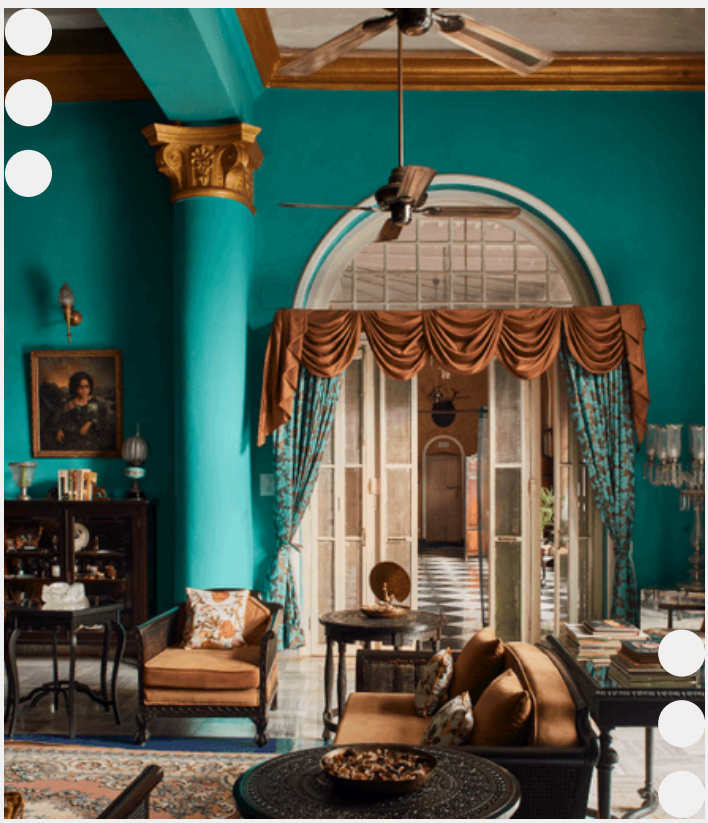

बड़ी कोठी: एक शाही ठहराव

बड़ी कोठी का निर्माण 1700 के दशक के अंत में हुआ था। इसका नाम 'बड़ी कोठी' (जिसका शाब्दिक अर्थ है "बड़े भाई का महल") 1800 के दशक में रखा गया था, क्योंकि यह राय बहादुर बुद्ध सिंह दूधोरिया के घर थी, जो शहरवासी समुदाय के महत्वपूर्ण सदस्य थे। बड़ी कोठी में रहने वाले राय बहादुर बुद्ध सिंह दूधोरिया को इस क्षेत्र के एक प्रमुख व्यक्तित्व के रूप में जाना जाता है, और यही वजह है कि इस घर में शाही विरासत समाई हुई है।
समय के साथ इस क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में गिरावट के कारण, जो शाही जीवनशैली कभी इस घर में दिखती थी, वह अब दीवारों पर एक कहानी बनकर रह गई है। फिर भी, बड़ी कोठी आज भी अपनी अतिथि सत्कार कला और शाही अनुभव प्रदान करती है। यह जगह अब भी लक्ज़री और राजसी ठहराव का अहसास कराती है।

क्षेत्र का पारिस्थितिकी तंत्र पूरी तरह बदल चुका है, लेकिन बड़ी कोठी ने अपने अद्वितीय "रस्टिक लक्ज़री" को बनाए रखा है। कनाडा के प्रसिद्ध वास्तुकार डॉ. समर चंद्रा ने इस धरोहर भवन के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया और 5 वर्षों में इसे पूर्व की भव्यता में वापस ला दिया। अब यह पर्यटन के लिए एक आकर्षक स्थल बन चुका है।

कैसे पहुंचे
बड़ी कोठी कोलकाता से 4 घंटे की दूरी पर स्थित है, और यह नदी के किनारे पर बसी हुई एक अद्भुत शाही धरोहर है, जो अब पर्यटकों को आकर्षित कर रही है।

वायु प्रदूषण यात्रा को कैसे प्रभावित करेगा?

गौर कंजीलाल

नए जमाने की होटल्स और एयर ट्रीटमेंट

अब कुछ होटल अपने बजट में नए एचवीएसी (हीटिंग, वेंटिलेशन और एयर कंडीशनिंग) सिस्टम को शामिल कर रहे हैं, जो स्थल पर मोल्ड और धूल को खत्म करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।न्यूयॉर्क के RH गेस्टहाउस जैसे बुटीक होटल अपने मेहमानों कोआरामदायक नींद के लिए 50,000 डॉलर की कीमत वाली "फ्रेशबैड" की पेशकश करते हैं, जो गद्दे के माध्यम से शुद्ध हवा को प्रवाहित करता है, ताकि मेहमान तापमान औरआर्द्रता को कस्टमाइज कर सकें।

जो यात्री हवा में खूबसूरती की तलाश में हैं, वे भीआराम से रह सकते हैं।क्रायोथेरेपी, जो शरीर कोअ त्यधिक ठंडे तापमान से संपर्क कराती है, अब लक्ज़री स्पा में दिखाई देती है, जो शुद्ध हवा की क्षमता को बढ़ावा देती है, जो जेट लैग वाले यात्रियों की त्वचा में परिसंचरण को फिर से सक्रिय करती है। विक्टोरियन काल के डॉक्टर इस विचार से सहमत होते।

स्वच्छ हवा की छुट्टियाँ: एक इतिहास

स्वस्थ हवा के प्रति हमारी दीवानगी नई नहीं है।विक्टोरियन काल के डॉक्टरों ने अपने कई मरीज़ों को "हवा बदलने" की सलाह दी थी, जिसमें गंदे शहरों से दूर पहाड़ों, तटीय रिसॉर्ट्स और ताजगी देने वाली समुद्री यात्राओं की ओर जाने की सलाह दी जाती थी।ब्रिटेन में, ऐसे कई रिसॉर्ट्स जैसे बौर्नमाउथ और टॉर्के आज भी लोकप्रिय गंतव्य बने हुए हैं।

अगर हम और पीछे जाएं, तो यह माना जाता था कि एक अस्वस्थ वातावरण या "मियास्मा" बीमारियों का कारण होता है, और मलेरिया का नाम "मालाआरिया" (मलिनहवा) से लिया गया था, जो एकइतालवी शब्द था।

स्वच्छ हवा का पर्यटन पर असर

कुछ देश, जो स्वच्छ हवा से भरपूर हैं, अब इसे अपनी मूल्यवान संपत्ति के रूप में पहचानने लगे हैं। 2020 में एक अध्ययन में पाया गया कि वायु गुणवत्ता यूरोप के प्रमुख तीन प्रतिस्पर्धात्मक पर्यटन आकर्षणों में से एक है।इस के साथ ही, इस प्रवृत्ति को विश्वभर में विपणन अभियानों में देखा जा सकता है।उदाहरण के लिए, कनाडा के 2023 पर्यटनअभियान ने पर्यटकों को "अपने मेपल पत्ते को महसूस करने" का निमंत्रण दिया। इस विज्ञापन में एक खुशमिजाज कनाडाई व्यक्ति एक हवा से लहराता हुआ प्रकाश स्तंभ के पास खड़ा है, और दर्शकों से कहताहै , "तनाव से भरी दुनिया में ताजगी से भरी हवा का अनुभव करें।"

उसी वर्ष, ऑस्ट्रेलिया के पर्यटन तस्मानिया ने अपना "कम डाउन फॉर एयर" अभियान प्रस्तुत किया।एक वीडियो में कोई संवादन हीं था, केवल एक अकेला तैराक समुद्र में कूदता हुआ, समुद्र की लहरों की आवाज़ और अंत में लिखा हुआ था: "वॉक-इन स्वागत है।" तस्मानिया का वायुमंडल दुनिया में सब से स्वच्छ वायुमंडल में से एक है।

फेलिसियानो-चोन, जो वैश्विक स्वास्थ्य सम्मेलन कीसलाहकार बोर्ड की सदस्य भी हैं, का कहना है कि पर्यटक केवलआसान सांसों के लिए नहीं आएंगे। "यह पूरी प्रकृति के अनुभव के बारे में है। यह प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव करने की चाह एक वैश्विक प्रवृत्ति बन चुकी है, जो एडवेंचर, वेलनेस और अकेले यात्रा करने वालों के बीच समान है।और यह ट्रेंड आने वाले वर्षों में औ रबढ़ेगा।"

भविष्य में हवा का महत्व

स्वच्छ वायु की बढ़ती चाहत के कारण, छुट्टियां मनाने वाले अब अत्यधिक स्थानों की ओर बढ़ रहे हैं। 2022-2023 ग्रीष्मकाल में, अंटार्कटिका में 100,000 से अधिक पर्यटक पहुंचे, जो इस के सुंदर दृश्यों, ठंडी हवा और एकांत का अनुभव करने के लिए आए थे।यह संख्या और बढ़ने की उम्मीद है, और कुछ विशेषज्ञों को चिंता है कि यह अगले स्थानों में से एक हो सकता है जहां अत्यधिक पर्यटन का दबाव होगा।

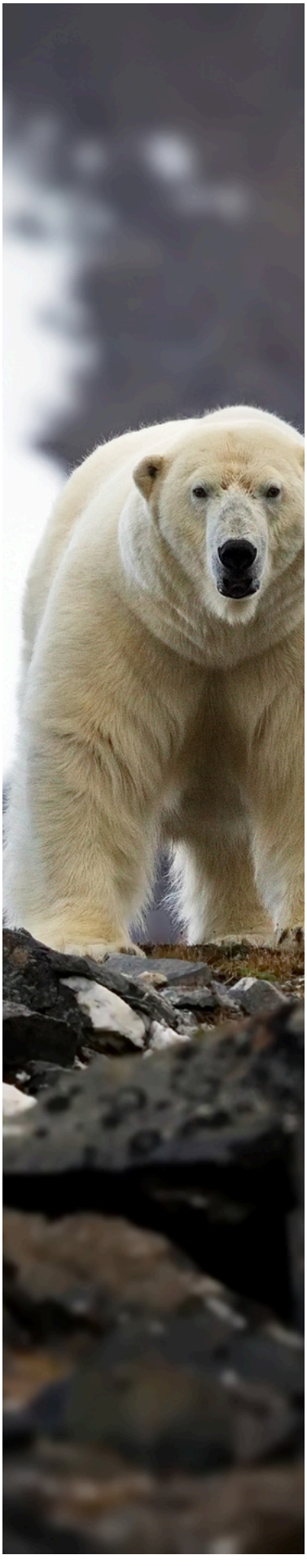

स्वालबार्ड में जीवन

दुनिया के सबसे उत्तरी दिशा में बसा हुआ शहर

क्या आपने कभी सोचा है कि पृथ्वी के सबसे दूरस्थ स्थानों में से एक जगह पर जीवन कैसा होता है? स्वागत है स्वालबार्ड में, विशेष रूप से लोंगयेरब्येन में, जो ग्रह पर सबसे उत्तरी बसे हुआ शहर है। उत्तरी ध्रुव से सिर्फ 650 मील की दूरी प रस्थित, यह ठंडी द्वीप समूह एक अनोखे जीवन शैली का दृश्य प्रस्तुत करता है।

लोंगयेरब्येन: एक छोटा आर्कटिक शहर

दस घंटे की तीन उड़ानों के बाद, यात्री लोंगयेरब्येन पहुँचते हैं, जहाँ बर्फ और बर्फीले इलाकों का राज होता है। लोंगयेरब्येन को अधिकांश लोग एक शहर नहीं मानते –यहाँ की जनसंख्या केवल 2,144 है।इतनी छोटी संख्या में, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि साइकिलें अक्सर बिना ताले के छोड़ी जाती हैं।इस करीबी समुदाय में हर कोई एक-दूसरे को जानता है, और चोरी की घटनाएँ लगभग न के बराबर हैं।

लकड़ी के घरों से सजी सड़कें ताले की आवश्यकता नहीं महसूस करातीं, जो सुरक्षा की मजबूत भावना को दर्शाती हैं।अधिकांश संरचनाएँ पर्माफ्रॉस्ट (स्थायीबर्फ) पर खड़ी हैं, क्योंकि यहाँ साल के दस महीने बर्फ से ढंके रहते हैं। यहाँ यात्रा करने के लिए स्नो मोबाइल का प्रयोग किया जाता है, जब कि स्लेड डॉग इस बर्फीली जगह पर साथी के रूप में काम करते हैं। दिलचस्प बात यह है कि यहां कुत्तों का पालन करना प्रतिबंधित है क्योंकि रेबीज का खतरा है।

स्थानीय जीवन का एक दृश्य

अपनी दूरस्थता के बावजूद, लोंगयेरब्येन में आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ एक Souvenir shop, किराने की दुकानें, रेस्तरां और होटल मुख्य सड़क पर स्थित हैं।शहर के चौक पर एक स्मारक है जो खनिकों को समर्पित है–वे लोग जो एक सदी पहले इस बस्ती के संस्थापक थे। 1906 में, अमेरिकन जॉन लोंगयेर ने कोयला खनन शुरू किया, जिससे आज की बस्ती का मार्ग प्रशस्त हुआ।

यहां कुछ अद्वितीय स्थानीय कानून हैं, जैसे कि मृत्यु पर प्रतिबंध। यहाँ के लोग उम्र के बाद मुख्य भूमि भेज दिए जाते हैं। यह कानून इसलिए है क्योंकि किसी भी प्रकार के अंतिम संस्कार से ध्रुवीय भालू आकर्षित हो सकते हैं। इसलिए, यहाँ का एकमात्र कब्रिस्तान में सिर्फ 35 लोग दफनाए गए हैं, जिनकी चिता की गई थी ताकि वन्य जीवों को आकर्षित न किया जा सके।

वैश्विक बीज भंडार

पर्माफ्रॉस्ट के नीचे एक अद्भुत खजाना स्थित है, वैश्विक बीज भंडार।यह सुविधा पौधों की प्रजातियों को वैश्विक आपदाओं से बचाने के लिए है। यह पहाड़ी के अंदर 120 मीटर गहरी फैली हुई है, जिसमें दुनिया भ रके 4.5 मिलियन बीज रखे गए हैं।

इस भंडार तक पहुँच प्राप्त करना कोई आसान काम नहीं है।इसके दरवाजे खोलने के लिए केवल कुछ लोगों के पास चाबियाँ होती हैं, और यह सुविधा कैमरों और सेंसर्स से निगरानी की जाती है। यह भी उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र की प्राकृतिक ठंडक इन महत्वपूर्ण बीजों को संरक्षित रखने का काम करती है।

उत्तर का सबसे उत्तरी हवाई अड्डा

वायु यात्रा लोंगयेरब्येन को बाहरी दुनिया से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।स्वालबार्ड हवाई अड्डा एक प्रमुख हब है, लेकिन यहाँ की उड़ानों के लिए केवल सब से कुशल पायलटों को नियुक्त किया जाता है। कठोर मौसम, जिसमें तेज हवाएँ और कम दृश्यता शामिल हैं, लैंडिंग को चुनौतीपूर्ण बनाता है।

1996 में एक रूसी TU-154 के दुर्घटनाग्रस्त होने जैसी त्रासदियाँ घटीं, जिसमें सभी सवारों की मौत हो गई थी।ऐसी घटनाएँ इस दूरस्थ क्षेत्र में उड़ान भरने के लिए अत्यधिक सटीकता और कौशल की आवश्यकता को उजागर करती हैं।

भारत के पर्यटन उद्योग को पांच साल में नया रूप देने की योजना

केंद्र सरकार अगले पांच साल में 100 प्रमुख पर्यटन स्थलों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए काम करेगी।

भारत के पर्यटन उद्योग को वैश्विक मानकों के अनुरूप विकसित करने के लिए एक नई योजना तैयार की जा रही है।केंद्र सरकार अगले पांच साल में 100 प्रमुख पर्यटन स्थलों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने केलिए काम करेगी।इन स्थलों को उनके विशेष संभावनाओं के आधार पर तैयार किया जाएगा, और यह सुनिश्चित किया जाएगा कि प्रत्येक स्थल के पर्यटन की श्रेणी के अनुसार विकास किया जाए। इन स्थलों को विभिन्न पर्यटन श्रेणियों में बांटा जाएगा, जैसे- सांस्कृतिक पर्यटन, साहसिक पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, और सम्मेलन (MICE) पर्यटन।

सब से पहले, प्रमुख हवाई अड्डों पर वीज़ा, कस्टम और आव्रजन प्रक्रियाओं में सुधार किया जाएगा ताकि पर्यटकों को बेहतर अनुभव मिल सके। इस के अलावा, पर्यटकों के अनुभव को और बेहतर बनाने के लिए यात्रा संबंधित सुविधाओं को बेहतर किया जाएगा। यह योजना कई सरकारी विभागों के मंथन के बाद तैयार की जा रही है, जिसमें पर्यटन मंत्रालय प्रमुख रूप से शामिल है। सरकार का लक्ष्य 2029-2030 तक इस योजना को पूरा करना है।

भारत सरकार की यह योजना "Visit Bharat @2047" पहल का हिस्सा है, जिसके तहत भारत ने 2047 तक एक विशाल $3 ट्रिलियन (लगभग ₹2,50,00,000 करोड़) की पर्यटन अर्थव्यवस्था बनाने और 100 मिलियन (लगभग 10 करोड़) विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। 2023 में भारत ने 92.3 लाख (9.23 मिलियन) पर्यटकों का स्वागत किया, और 2023-24 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, वर्तमान में भारत की पर्यटन अर्थव्यवस्था का आकार ₹2,30,00,000 करोड़ (लगभग $2.3 ट्रिलियन) है।

भारत में अधिकांश पर्यटन आय (लगभग 95%) घरेलू पर्यटकों से आती है, जबकि विदेशी पर्यटकों की संख्या कम है। इसके बावजूद, विदेशों से आने वाले पर्यटकों में वृद्धि के लिए सरकार लगातार कदम उठा रही है, जिससे भारतीय पर्यटन उद्योग को और अधिक वैश्विक मान्यता मिल सके।

इस योजना के अंतर्गत विभिन्न पर्यटन स्थलों के विकास के लिए एक विशेष ध्यान दिया जाएगा। उदाहरण के लिए, ऐसे स्थल जो मीटिंग, इंसेंटिव, कॉन्फ्रेंस और एक्सिबिशन (MICE) पर्यटन के लिए उपयुक्त होंगे, उन्हें खास तौर पर इस श्रेणी की ज़रूरतों के अनुरूप विकसित किया जाएगा।इससे भारतीय शहरों और पर्यटन स्थलों को व्यापारिक और अंतर्राष्ट्रीय बैठकें आयोजित करने के लिए उपयुक्त स्थान बनने का अवसर मिलेगा।

इसके साथ ही, सरकार का उद्देश्य पर्यटकों के लिए भारत को एक सुरक्षित और आकर्षक स्थान बनाना है। इसके लिए, पर्यटकों के लिए बेहतर सुविधाएं, जैसे- स्वच्छता, सार्वजनिक परिवहन, डिजिटल सुविधाएं और पर्यटन स्थलों पर उच्च गुणवत्ता की सेवाएं प्रदान करने पर जोर दिया जाएगा। साथ ही, पर्यटकों के लिए कनेक्टिविटी को भी बेहतर बनाया जाएगा, ताकि वे आसानी से किसी भी स्थान पर यात्रा कर सकें।

आखिरकार, भारत को एक प्रमुख वैश्विक पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करने के लिए यह योजना न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक धरोहर और विविधता को भी दुनिया भर में फैलाने का एक अहम अवसर प्रदान करेगी।

भारतीय ट्रैवल इंडस्ट्री और आईपीओ: निवेश का एक नया अवसर

आज कल भारतीय ट्रैवल और टूरिज्म इंडस्ट्री तेजी से बढ़ रही है।घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पर्यटन में वृद्धि, बढ़ती आमदनी, और सरकारी पहल से इस क्षेत्र में निवेशकों के लिए काफी संभावनाएं उत्पन्न हो रही हैं।इस आर्टिकल में हम भारतीय ट्रैवल इंडस्ट्री में आईपीओ (Initial Public Offering) और शेयर बाजार में सूची बद्ध कंपनियों के बारे में बात करेंगे, ताकि उन निवेशकों को मदद मिल सके जो इस क्षेत्र में निवेश करने की सोच रहे हैं।

ट्रैवल स्टॉक्स क्या होते हैं?

टैव्रल स्टॉक्स उन कंपनियों के शेयर होते हैं जो याता, आतिथ्य (हॉस्पिटैलिटी), और टूरिज्म क्षेत्र में कार्यरत होती हैं। इनमें एयरलाइंस, होटल, टूर ऑपरेटर्स, और टैव्रल एजेंसियां शामिल हैं।जब लोग याता करते हैं, तो इन कंपनियों को फायदा होता है। भारत में पर्यटन क्षेत्र के विस्तार के कारण टैव्रल स्टॉक्स में निवेश से अच्छा मुनाफा होने की संभावना बढ़ गई है।

कौन-कौन सी ट्रैवल कंपनियां शेयर बाजार में हैं?

1.Thomas Cook (India) Ltd:
इस कंपनी की मार्केट कैप ₹9,894.91 करोड़ है और पिछले एक साल में इसका स्टॉक 91.72% तक बढ़ा है।हालांकि, इसका एक महीने का रिटर्न -2.82% है, लेकिन इसके शेयर अब भी आकर्षक हो सकते हैं, खास कर लंबी अवधि के निवेशकों के लिए।

2.Easy Trip Planners Ltd:
इसकी मार्केट कैप ₹7,189.17 करोड़ है और पिछले एक साल में इसका रिटर्न 2.71% रहा है। हालांकि, इस कंपनी के शेयरों में अभी भी 33.10% का अंतर हैइसके 52 सप्ताह के उच्चतम मूल्य से।

3.India Tourism Development Corp Ltd:
इसकी मार्केट कैप ₹6,037.31 करोड़ है और पिछले एक साल में इसके शेयरों ने अच्छा पदर्शन किया है।इसके एक साल का रिटर्न 67.22% रहा है, लेकिन फिलहाल यह अपने उच्चतम मूल्य से 32.23% नीचे है।

4.Mahasagar Travels Ltd:
यह गुजरात की एक टैव्रल कंपनी है, जिसकी मार्केट कैप ₹4.58 करोड़ है।इसके शेयरों ने पिछले एक साल में 66.29% का रिटर्न दिया है, लेकिन यह अपने उच्चतम मूल्य से 84.54% नीचे है।इस कंपनी का मुख्य व्यवसाय बसों के जरिए याता सेवाएं पदान करना है।

निवेश के परिणाम और अपेक्षाएं

टैव्रल कंपनियों में निवेश करने के दौरान यह महत्वपूर्ण है कि आप उनकी वित्तीय स्थिति, बाजार की मांग और विकास की संभावनाओं को समझें। जबकि कुछ कंपनियों ने आईपीओ के जरिए अच्छा पदर्शन किया है, वहीं अन्य के शेयर कुछ समय के लिए फ्लैट या नीचे जा सकते हैं। आईपीओ के दौरान निवेशकों को ध्यान रखना चाहिए कि हर निवेश में जोखिम होता है, और यह जरूरी नहीं कि सभी कंपनियां अच्छा रिटर्न ही दें।

निष्कर्ष

भारत का पर्यटन उद्योग तेजी से बढ़ रहा है, और इस में निवेश करने का एक अच्छा अवसर हो सकता है।यदि आप टैव्रल स्टॉक्स में निवेश करने का सोच रहे हैं, तो आप को इसके साथ जुड़ी जोखिमों और अवसरों का विश्लेषण करना चाहिए। इस क्षेत्र की प्रमुख कंपनियां जैसे Ixigo, Leela Hotels, और Brigade Hotel Ventures आने वाले समय में एक मजबूत रिटर्न दे सकती हैं, लेकिन आपको अपने निवेश का सही चुनाव करना होगा।

इसलिए, यदि आप स्टॉक मार्केट में निवेश करना चाहते हैं, तो सही जानकारी और योजना के साथ कदम उठाना चाहिए ताकि आप अच्छा मुनाफा कमा सकें।

यात्रा आमंत्रण के संवादाता की निजी राय है , निवेश की सलाह अपने विवेक से ले , डाटा न्यूज़ ब्लॉग से प्राप्त है , निवेश से पहले जांच ले ,

माचू पिच्चू

रहस्यों की गहरी खोज

माचू पिच्चू, इंका सभ्यता का एक प्रमुख प्रतीक, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों और यात्रियों को समान रूप से आकर्षित करता है। पेरू के एंडीज़ पहाड़ों में स्थित, यह प्राचीन स्थल रहस्यों से घिरा हुआ है, इसके उत्पत्ति, उद्देश्य और इसके निर्माताओं द्वारा हासिल की गई अद्वितीय इंजीनियरिंग उपलब्धियों के बारे में अनुत्तरित प्रश्न हैं। चलिए, हम माचू पिच्चू को दुनिया के सबसे दिलचस्प पुरातात्विक स्थलों में से एक बनाने वाले आकर्षक तत्वों में गहरे उतरते हैं।

माचू पिच्चू की खोज की कहानी उतनी ही रोमांचक है जितना कि यह स्थल स्वयं। 24 जुलाई, 1911 को, येल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हायरम बिंघम ने इंका के खोए हुए सोने के शहर की खोज में यात्रा शुरू की, जिसे वे विल्काबांबा नामक स्थान पर छिपा हुआ मानते थे। इसके बजाय, उन्होंने जो खंडहर पाए, वह माचू पिच्चू के रूप में जानी जाती है, जिसे स्थानीय लोग सदियों से इस नाम से पुकारते आए थे।
बिंघम ने 5 वर्ग मील के इंका खंडहरों को उजागर किया, जिसमें इंका की अद्वितीय पत्थरकारी कला, जिसे ऐशलर मैसनरी कहा जाता है, को देखा गया। इस तकनीक में पत्थरों को इस तरह से जोड़ा गया था कि उनके बीच एक डॉलर का नोट भी नहीं समा सकता था। माचू पिच्चू के निर्माण में दिखाई गई सटीकता और शिल्पकला आज भी पुरातत्वविदों और इंजीनियरों को हैरान करती है।

प्राचीन प्रभावों के सिद्धांत

कुछ शोधकर्ता यह भी अटकलें लगा रहे हैं कि माचू पिच्चू के निर्माण में बाहरी जीवन के अस्तित्व का हाथ हो सकता है। पत्थरों की सटीकता और परियोजना के विशाल आकार ने इस बात पर चर्चा को जन्म दिया है कि क्या इंका को किसी दूसरे संसार के प्राणियों से सहायता मिली थी। हालांकि इन सिद्धांतों को अक्सर अज्ञानता के रूप में खारिज किया जाता है, फिर भी ये माचू पिच्चू के रहस्यों को और भी दिलचस्प बनाते हैं। इसके अलावा, इंका संस्कृति की कथाएँ आकाशीय प्राणियों से सम्राट पाचाकूति के मार्गदर्शन प्राप्त करने के बारे में बताती हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि माचू पिच्चू के निर्माण में दिव्य हस्तक्षेप हो सकता है।

इंजीनियरिंग की अद्भुत कृतियाँ

माचू पिच्चू का निर्माण इंका इंजीनियरिंग की परिष्कृता का प्रमाण है। यह स्थल एक पहाड़ी के शिखर पर स्थित है, और इंका ने इसे बिना आज की उन्नत तकनीकों के निर्माण किया। भारी पत्थरों को, जिनका वजन 50 टन से अधिक था, इतनी ऊँचाई पर लाने की उपलब्धि यह सवाल खड़ा करती है कि यह किस प्रकार साधारण उपकरणों से संभव हुआ। माचू पिच्चू के निर्माण का एक और आकर्षक पहलू इसका भूमिगत ढांचा है। अनुमान है कि निर्माण का लगभग 60% हिस्सा सतह के नीचे छिपा हुआ हो सकता है, जिसमें गहरी नींव स्थिरता और जल निकासी के लिए आवश्यक थीं। यह भूमिगत नेटवर्क क्षेत्र में होने वाले भूकंपीय हलचलों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक था।

माचू पिच्चू का परित्याग

एक और निरंतर रहस्य यह है कि माचू पिच्चू को क्यों छोड़ा गया। इतिहासकारों का मानना है कि स्पेनिश विजय के बाद इंका सभ्यता को युद्ध और रोग के कारण बड़े पैमाने पर नुकसान हुआ, और इस कारण यह स्थल परित्यक्त हो गया। हालांकि, इसके परित्याग के सही कारण अभी भी अस्पष्ट हैं।
एक सिद्धांत यह है कि माचू पिच्चू के अस्तित्व का ज्ञान केवल इंका अभिजात वर्ग तक सीमित था, और जब वे वहां से चले गए, तो यह स्थल सामूहिक स्मृति से लुप्त हो गया। एक अन्य परिकल्पना यह है कि स्पेनियों से लड़ने के लिए सक्षम पुरुषों को भर्ती किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्र की जनसंख्या घट गई।

माचू पिच्चू का उद्देश्य

माचू पिच्चू का उद्देश्य इतिहासकारों के बीच बहस का विषय बना हुआ है। जबकि यह सामान्यत: स्वीकार किया जाता है कि यह स्थल पाचाकूति के लिए एक शाही संपत्ति के रूप में कार्य करता था, इसके अन्य संभावित कार्यों को लेकर भी सिद्धांत प्रचलित हैं। कुछ का कहना है कि यह एक धार्मिक स्थल था, जबकि अन्य का मानना है कि यह एक खगोलशास्त्रीय वेधशाला या महत्वपूर्ण अनुष्ठानों के लिए एक औपचारिक केंद्र था।
माचू पिच्चू का आंतरिक संरचना, जिसमें मंदिर, चौक और कृषि आंगन शामिल हैं, इस विचार का समर्थन करती है कि यह एक बहुउद्देशीय स्थल था। वहां की संरचनाएं खगोलशास्त्रीय घटनाओं के साथ मेल खाती हैं, जो यह संकेत देती हैं कि यहां के लोग आकाशीय यांत्रिकी की गहरी समझ रखते थे, जो कृषि योजना के लिए महत्वपूर्ण हो सकती थी।

पाचाकूति की किंवदंती

पाचाकूति, इंका साम्राज्य के नौवें शासक, को अक्सर माचू पिच्चू के निर्माण का श्रेय दिया जाता है। किंवदंतियों में यह कहा जाता है कि उनकी ममी माचू पिच्चू के भीतर छिपी हो सकती है। उनकी मृत्यु के बाद 1471 में, उनके शरीर को विभिन्न स्थानों पर ले जाया गया था, और उनका अंतिम विश्राम स्थल एक रहस्य बना हुआ है। कुछ का मानना है कि पाचाकूति की ममी को माचू पिच्चू वापस लाकर फिर से दफनाया गया होगा, जिससे इस स्थल को उनके जीवन और मृत्यु के साथ जोड़ा गया।

पुरातात्विक खोज और जानकारी

हाल के वर्षों में, माचू पिच्चू के आसपास की पुरातात्विक खोजों ने कुछ हैरान करने वाले तथ्य सामने लाए हैं जो इस स्थल के इतिहास को लेकर हमारी समझ को चुनौती देते हैं। उदाहरण के लिए, 2016 में एक टीम ने स्थल के पास एक ग्रेनाइट शिलाखंड पर हल्के प्रतीक खोजे, जो यह संकेत देते हैं कि यह क्षेत्र इंका से पहले भी बसा हुआ था। ये प्रतीक और 800 ई. के आस-पास की गुफा चित्रकला यह दर्शाती हैं कि इस स्थल का इतिहास इससे कहीं अधिक पुराना हो सकता है।
ग्राउंड-पेनेट्रेटिंग रडार का उपयोग करके मंदिर के तीन खिड़कियों के नीचे संभावित छुपे हुए कक्षों का पता लगाने की कोशिश की गई है, जिससे यह संभावना जताई जा रही है कि वहां महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों, जैसे पाचाकूति, की ममीकृत REMAINS हो सकती हैं।

प्रेस विज्ञप्ति

OTOAI ने 2024-2026 के कार्यकाल के लिए नई नेतृत्व टीम की घोषणा की , नव निर्वाचित कार्यसमिति सदस्य • अध्यक्ष: श्री हिमांशु केसरी पाटिल, • उपाध्यक्ष: श्री श्रवण भल्ला, • महासचिव: श्री सिद्धार्थ खन्ना को जिम्मेदारी मिली

दिल्ली पर्यटन ने 55वें अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव गोवा में भाग लिया

जमैका सरकार ने अपनी पहुंच को और बढ़ाने और अंतरराष्ट्रीय पर्यटन बाजार को बढ़ावा देने के लिए हीथ्रो, लंदन से मोंटेगो बे के लिए एक नई नॉन-स्टॉप उड़ान शुरू की है, जैसा कि माननीय एडमंड बार्टलेट, पर्यटन मंत्री ने कहा। यह सीधी उड़ान ब्रिटिश और भारतीय पर्यटकों को लक्षित करती है और जमैका आने वाले यात्रियों की संख्या में वृद्धि करने में मदद करेगी।

दिल्ली पर्यटन ने अपना 50वां स्थापना दिवस मनाया

दिल्ली पर्यटन ने दिल्ली फिल्म नीति शुरू की, जो दिल्ली के फिल्म निर्माताओं को सभी सुविधाएं प्रदान करती है और फिल्मों के लिए नए स्थानों को बढ़ावा देती है, जो भी एक सराहनीय कदम है। हाल ही में दिल्ली पर्यटन ने हेरिटेज वॉक फेस्टिवल का आयोजन किया तथा दिल्ली को पसंदीदा फिल्म शूटिंग स्थल के रूप में बढ़ावा देने के लिए आईएफएफआई गोवा में भाग लिया।

एडवेंचर टूरिज्म को बढ़ावा देने एवं पर्यटन गतिविधियों में विविधता लाने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड द्वारा लगातार चौथे साल स्काई डाइविंग फेस्टिवल का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष उज्जैन में तीन माह के लिये पर्यटकों को 10 हजार फीट की ऊंचाई से छलांग लगाकर महाकाल की नगरी को देखने का रोमांचकारी अनुभव मिल सकेगा।

प्रेस विज्ञप्ति यहां भेजें

yatraamantran@gmail.com

भारतीय रेलवे का हरित सफर

भारतीय रेलवे, जो अपनी हरित और पर्यावरणीय दृष्टिकोण को सशक्त बनाने के लिए 100% ट्रैक विद्युतीकरण की दिशा में काम कर रही है, उसने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। रेलवे अगले कुछ वर्षों में अपने डीजल इंजन बेड़े में से 2500 इंजन को बनाए रखने का निर्णय लिया है। यह कदम विशेष रूप से आपदा प्रबंधन और सामरिक उद्देश्यों के लिए है।

वेबटेक के इंजन और उनका योगदान

भारतीय रेलवे और वेबटेक के सहयोग से निर्मित उच्च शक्ति वाले डीजल इंजन (HHP Locomotives) ने भारतीय रेलवे के बेड़े में एक नई ऊर्जा भरी है। इन इंजन की निर्माण प्रक्रिया 2016 में शुरू हुई थी, और अब तक कुल 650 वेबटेक इंजन भारतीय रेलवे के बेड़े में शामिल किए गए हैं। ये इंजन पहले के इंजन की तुलना में अधिक ईंधन दक्ष और कम प्रदूषण उत्पन्न करने वाले हैं। इन इंजन का निर्यात अन्य देशों में भी किया जा रहा है, और 2025 में इन इंजन को अफ्रीकी देशों में भी भेजा जाएगा। भारत में वर्तमान में कुल 2466 HHP डीजल इंजन कार्यरत हैं। इसके अलावा, 966 अतिरिक्त HHP इंजन भी भारतीय रेलवे के नेटवर्क में शामिल किए जाएंगे।

डीजल इंजन के ऑपरेशन पर खर्च

भारतीय रेलवे के संचालन में डीजल इंजन का खर्च भी एक महत्वपूर्ण कारक है। 2023-24 में भारतीय रेलवे ने डीजल चालित ट्रेनों को चलाने के लिए कुल 14,155.90 करोड़ रुपये खर्च किए थे। यह खर्च रेलवे के कुल बजट का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इस खर्च को घटाने के लिए विद्युतीकरण की दिशा में तेजी से काम किया जा रहा है। हालांकि, डीजल इंजन की कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में आवश्यकता बनी रहेगी, जिस कारण इन्हें कुछ वर्षों तक सेवा में रखा जाएगा।

100% विद्युतीकरण की दिशा में बढ़ता भारतीय रेलवे

भारतीय रेलवे ने 2024 के अंत तक अपने नेटवर्क को 100% विद्युतीकरण करने का लक्ष्य रखा है। इसका उद्देश्य पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना और रेलवे संचालन को और अधिक ऊर्जा कुशल बनाना है। विद्युतीकरण से कार्बन उत्सर्जन में भारी कमी आएगी, और रेलवे की संचालन लागत भी घटेगी। इस दिशा में भारतीय रेलवे ने कई कदम उठाए हैं और कई स्थानों पर विद्युतीकरण कार्य पहले ही पूरा हो चुका है। 1 नवंबर 2023 तक, लगभग 97% रेलवे नेटवर्क का विद्युतीकरण हो चुका था, जो कुल 64,285 किलोमीटर लंबी रेल मार्ग पर फैला हुआ है, जो 20 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से गुजरता है।

सुर्खियाँ

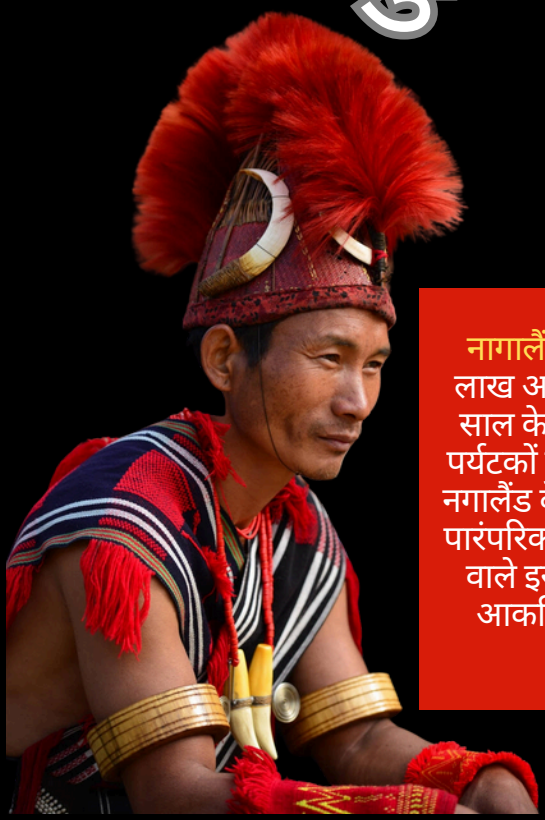

कोलकाता का नेताजी सुभाष चंद्र बोस एयरपोर्ट **100** वर्षों से भारत के लिए एक महत्वपूर्ण गेटवे के रूप में कार्य कर रहा है, जो दुनियाभर के लोगों, संस्कृतियों और अर्थव्यवस्थाओं को जोड़ता है। यह एयरपोर्ट भारत और विश्व के बीच एक पुल के रूप में खड़ा है और 'सिटी ऑफ जॉय' का गर्वीला प्रतिनिधि है। इस शताब्दी उत्सव ने एयरपोर्ट की अद्वितीय यात्रा को उजागर किया और भारत के उड्डयन क्षेत्र की शानदार वृद्धि और संभावनाओं को दर्शाया।

नागालैंड के हॉर्नबिल महोत्सव में इस साल **1.73** लाख आगंतुकों की संख्या दर्ज की गई, जो पिछले साल के मुकाबले अधिक है। इसमें **2,375** विदेशी पर्यटकों ने भी हिस्सा लिया। यह महोत्सव खूबसूरत नगालैंड के किसामा में आयोजित हो रहा है, जो एक पारंपरिक नागा विरासत गांव है। **10** दिनों तक चलने वाले इस आयोजन ने बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित किया, जिससे पर्यटन के क्षेत्र में एक सकारात्मक वृद्धि देखी गई।

दुबई में वीजा अस्वीकृति के मामले बढ़ रहे हैं, क्योंकि इमिग्रेशन विभाग ने पर्यटकों के लिए सख्त शर्तें लागू की हैं। अब यात्रियों को होटल बुकिंग दस्तावेज़, **QR** कोड और वापसी टिकट की कॉपी देना अनिवार्य है। रिश्तेदारों के घर ठहरने वाले यात्रियों को मेज़बान से अतिरिक्त आवास प्रमाण भी चाहिए। **2023** में, भारतीयों को वीजा रद्द होने से लगभग **109** करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। शेंगेन स्टैटिस्टिक्स पोर्टल के अनुसार, भारतीयों की **966,687** वीजा आवेदन में से **151,752** अस्वीकृत हुए थे।

जर्मनी और फ्रांस ने बर्लिन और पेरिस के बीच सीधे उच्च गति वाली ट्रेन की शुरुआत की

नई ट्रेन फ्रैंकफर्ट, कार्ल्सरूहे और फ्रांस के स्ट्रासबर्ग शहर में रुकती है, जो यूरोपीय संसद के घरों में से एक है। पश्चिम की ओर जाने वाली ट्रेन पेरिस में रात **8** बजे से पहले पहुंचेगी, जबकि पूर्व की ओर जाने वाली ट्रेन बर्लिन में शाम **6** बजे के बाद पहुंचेगी।

क्रूज भारत मिशन: **2029** तक **10** लाख पर्यटकों का लक्ष्य

केंद्रीय सरकार ने पांच साल के "क्रूज भारत मिशन" की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य **2029** तक भारत में क्रूज पर्यटन को बढ़ाकर एक मिलियन (**10** लाख) पर्यटकों तक पहुंचाना है और इस क्षेत्र में **4** लाख रोजगार अवसर उत्पन्न करना है। इस मिशन के तहत वित्तीय प्रोत्साहन, कैबोटेज़ कानूनों में ढील और एक विशेष फंड की स्थापना की योजना है। मिशन के अनुसार, भारतीय बंदरगाहों का प्रतिनिधित्व करने वाली भारतीय पोर्ट्स एसोसिएशन के तहत क्रूज विकास के लिए एक विशेष उद्देश्य वाहन बनाया जाएगा।

मॉरीशस लक्ज़री गोल्फ पर्यटन को आकर्षित करने की कोशिश में

मॉरीशस, जो **2,040** वर्ग किलोमीटर (**788** वर्ग मील) में फैला है, खुद को एक प्रमुख लक्ज़री गोल्फ डेस्टिनेशन के रूप में स्थापित करने की योजना बना रहा है। यहाँ पहले से ही **10** हाई-एंड गोल्फ कोर्स हैं, और **2026** में **11**वां गोल्फ कोर्स, "हर्मोनी बीचकॉम्बर्स गोल्फ कोर्स," प्रसिद्ध आर्किटेक्ट ओलिवियर डोंग्रादी द्वारा डिज़ाइन किया जाएगा। गोल्फ पर्यटन पहले ही देश के पर्यटकों का **5%** हिस्सा बना चुका है, जो लगभग **60,000** पर्यटकों के बराबर है।

यूरोप में अनोखी क्रिसमस परंपराएँ

जैसे-जैसे छुट्टियों का मौसम नजदीक आता है, दुनिया भर में क्रिसमस की ख़ुशबू, आवाज़ और दृश्य फैल जाते हैं। हालांकि कई क्रिसमस परंपराएँ सार्वभौमिक हैं, लेकिन यूरोप में कुछ ऐसी अनोखी और अजीब परंपराएँ हैं जो इस महापर्व को और भी दिलचस्प बनाती हैं। इन विशेष परंपराओं से यूरोप की सांस्कृतिक विविधता का पता चलता है। आइए जानते हैं यूरोप की कुछ दिलचस्प क्रिसमस परंपराओं के बारे में।

आइसलैंड के यूल लैड्स: जोलास्वेइन

आइसलैंड की सुरम्य और रहस्यमय भूमि में क्रिसमस के दौरान यूललैड्स, या जोलास्वेइन का आगमन होता है।ये 13 ट्रोल जैसे पात्र होते हैं जो पहाड़ों से आते हैंऔर छुट्टियों का उत्सव मनाते हुए मस्ती करते हैं। प्रत्येक यूललैड्स की अपनी विशिष्ट पहचान होती है, जैसे स्टेक्जस्टॉर जो भेड़ों को परेशान करता है, और गट्टाथेफुर जो पेंट्री से खाना चुराता है।ये पात्र 12 दिसंबर सेएक-एक करके आते हैं, और क्रिसमस ईव तक इनकी यात्रा जारी रहती है।

ऑस्ट्रिया और जर्मनी का क्रैम्पस

जहां दुनिया के अधिकांश हिस्सों में सांताक्लॉज को क्रिसमस का प्रतीक माना जाता है, वहींऑस्ट्रिया और जर्मनी के कुछ हिस्सों में क्रैम्पस की एक अलग और डरावनी छवि है।क्रैम्पस एक सींगवाला, राक्षसी प्राणी है, जो बच्चों को सजा देने का काम करता है। अगर बच्चे शरारत करते हैं, तो क्रैम्पस उन्हें कोड़े मारता है या अपने साथ अपने घर ले जाता है। इस परंपरा की जड़ें प्राचीन एल्पाइन लोककथाओं में हैं, जहाँ इसे संतनिकोलस के विपरीत एक नकारात्मक शक्ति के रूप में देखा जाता था।

स्कैंडिनेविया का एल्फ ऑन द शेल्फ

हालांकि "एल्फ ऑन द शेल्फ" परंपरा अब दुनिया भर में लोकप्रिय हो गई है, इसकी जड़ें स्कैंडिनेवियाई देशों, जैसे डेनमार्क, नॉर्वे और स्वीडन में हैं।यहाँ इसे "टॉमटे" या "निस्से" कहा जाता है, जो एक छोटे से, दाढ़ी वाले और लाल टोपी पहने व्यक्ति की तरह होते हैं।यह शरारती प्राणी घर के कोनों में छुपकर परिवार की गतिविधियों पर नजर रखते हैंऔर घर के सदस्यों की रक्षा करते हैं।इन्हें शुभता और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

अजीबो-गरीब परंपराओं को अपनाना

चेतन वाढेर

जैसा कि हमने देखा, यूरोप की क्रिसमस परंपराएँ एक विविध और अक्सरअजीबो-गरीब ताने-बाने की तरह हैं, जो महाद्वीप की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और लोककथाओं को दर्शाती हैं।स्पेन के कागाटियो से लेकर ऑस्ट्रिया और जर्मनी के क्रैम्पस, और आइसलैंड के यूललैड्स तक, ये अनोखी परंपराएँ कहानी सुनाने की निरंतर शक्ति को दर्शाती हैं और यह दिखाती हैं किसमय के साथ समुदायों ने अपनी छुट्टियों की मनाने की परंपराओं को कैसे विकसित और अनुकूलित किया है।

अजीबो-गरीब परंपराओं को अपनाकर और यूरोप की क्रिसमस परंपराओं की विविधता का उत्सव मनाकर, हम उस सांस्कृतिक समृद्धि की गहरी सराहना कर सकते हैं, जो छुट्टियों के मौसम को इतना खास बनाती है।चाहे वहऑस्ट्रिया में क्रैम्पस परेड देखना हो, जर्मनी के क्रिसमस बाजारों की सैर करना हो, या आइसलैंड के यूललैड्स की शरारतों के बार में जानना हो, ये अनुभव हमारे दृष्टिकोण को विस्तृत करते हैं और हमारेआस-पास की दुनिया की समझ को गहरा करते हैं।

इस छुट्टियों के मौसम में अपनी यात्रा की योजना बनाते समय, उन रास्तों से परे जाने पर विचार करें जिन्हें अधिकतर लोग अपनाते हैं औ यूरोप की अनोखी और आकर्षक क्रिसमस परंपराओं में खुद को डुबो दें।कौन जानता है, शायद आपको ईन ई पसंदीदा परंपरा ढूंढ लें या एक छिपा हुआ रत्न खोज लें, जो हमेशा के लिए क्रिसमस के मौसम की जादू और अचरज को समझने के तरीके को आकार दे।

भारतीय यात्रा और पर्यटन उद्योग आने वाले वर्षों में मजबूत वृद्धि के लिए तैयार है, जो उच्च मांग द्वारा प्रेरित हो रहा है।

यात्रा और पर्यटन भारत की दो सबसे बड़ी उद्योगों में से हैं, जो देश के सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। इन उद्योगों का कुल आकार **185** बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है।

आईबीईएफ के अनुसार, यह आंकड़ा **2028** तक **512** बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की संभावना है, जो **22%** के वार्षिक वृद्धि दर का संकेत देता है।

हाल के दिनों में, होटल मालिकों और पर्यटन कंपनियों में उत्साह इस तथ्य से उत्पन्न हो रहा है कि घरेलू अवकाश यात्रा की मांग बनी हुई है, साथ ही मीटिंग्स, इंसेंटिव्स, कॉन्फ्रेंस और प्रदर्शनियों और व्यापार यात्रा के पुनरुद्धार के कारण भी यह सकारात्मक वातावरण बना हुआ है।

इस सकारात्मक माहौल में और वृद्धि करते हुए, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इस साल फरवरी में घोषणा की थी कि राज्यों को पर्यटन केंद्रों के विकास के लिए लंबी अवधि के ब्याज मुक्त ऋण दिए जाएंगे।

भारतीय यात्रा और

पर्यटन उद्योग का भविष्य

मजबूत विकास की ओर बढ़ते कदम

Our Mission: Educate, Empower and Inspire

We are

Will India Change Foundation

413A, Sector 68, HSIIDC, IMT,
Faridabad, Haryana 121004

9971229644

www.willindiachange.org